स्कूल : समाज का एक लघु रूप

पूजा विश्नोई

किसी व्यक्ति का सामाजिक परिवेश ही उसकी निकटतम दुनिया होती है। हम अपनी इस निकटतम दुनिया का अनुभव करते हुए बड़े होते हैं और यह बचपन से ही हमारे दृष्टिकोण और विचारों को आकार देता है। स्कूल इस निकटतम दुनिया का एक अभिन्न अंग है। इस संस्था से यह अपेक्षा की जाती है कि यह हमें सही और ग़लत में अन्तर करने, जीवन के मूल्यों को समझने और बेहतर नागरिक बनने के लिए तैयार करे। स्कूल भी इसी सामाजिक परिवेश में कार्य करते हैं और सामाजिक व्यवहार, दस्तूर स्कूल के व्यवहार और दस्तूरों में भी परिलक्षित होते हैं। स्कूल न केवल व्यक्तियों को रोज़गार के लिए प्रशिक्षित करते हैं, बल्कि बचपन से ही समानता, न्याय और सम्मान जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को सिखाने के बड़े उद्देश्य को भी पूरा करते हैं।

मुझे एक ऐसे स्कूल में पढ़ाने का अवसर मिला, जो वहाँ आने वाले बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य को पूरी तरह से समझते हुए बड़ी जागरूकता के साथ काम करता है। अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, एक ऐसा स्कूल है जिसे इस दृष्टि से स्थापित किया गया था कि बच्चों को सीखने का समग्रात्मक माहौल मिले। वह एक ऐसा स्थान हो जहाँ वे नई चीज़ें सीखें, जहाँ उन्हें ख़ुद जैसा ही बने रहने दिया जाए, जहाँ वे एक अच्छा इन्सान और ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक जीवन-मूल्य सीखें। वर्तमान में, इस स्कूल में पहली से चौथी तक की कक्षाएँ हैं, 129 विद्यार्थी और 9 शिक्षक हैं। विद्यालय में सह-शिक्षा है और सभी पृष्ठभूमियों के बच्चे आते हैं। उद्देश्य यही है कि विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों वाले बच्चे यहाँ आएँ ताकि विविध प्रकार की बातचीत और राय के लिए अवसर पैदा हो सकें।

स्कूल में जो बच्चे आते हैं वे सभी सामाजिक वर्गों के हैं, उनके अभिभावक विभिन्न प्रकार के पेशों से जुड़े हैं और वे अलग-अलग धर्मों से ताल्लुक़ रखते हैं। ये बच्चे पहले से ही अपने-अपने सम्बन्धित परिवारों और समुदाय के विचारों और विश्वासों से प्रभावित होते हैं और यह बात एक-दूसरे के प्रति उनके व्यवहार में और विभिन्न मुद्दों पर उनके विचारों में परिलक्षित होती है। हम यह समझ गए कि शिक्षकों के रूप में हमारा काम इन बच्चों को अकादमिक रूप से समर्थ और बेहतर इन्सान बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन करना है। आमतौर पर, स्कूलों में जीवन-मूल्यों की शिक्षा देने के लिए एक अलग घण्टा नियत होता है, या बहुत छोटी उम्र से ही कहानियों या उपदेशों के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाती है। लेकिन इस स्कूल में हमने स्कूल के माहौल को ऐसा बनाने की कोशिश की कि बच्चे *व्यवहार* में उन मूल्यों और विचारों को देखें, जिनके लिए हमारा संविधान प्रयास करता है और जो इन बच्चों को ऐसे ज़िम्मेदार नागरिक बनाएँगे जो अन्य लोगों के अधिकारों को महत्त्व दें और जो सही है, उसके लिए अपनी आवाज़ उठाएँ। इसके लिए ज़रूरी है कि स्कूलों में ऐसे व्यवहार दिखाई दें। यानी जहाँ हर किसी के साथ समान व्यवहार किया जाए, जहाँ मुद्दों को दलीलों और चर्चाओं के साथ हल किया जाए, मतभेदों के बावजूद सभी का सम्मान किया जाए आदि। बच्चे वही सीखते हैं जो वे देखते हैं, इसलिए हमने अपने स्कूल की संस्कृति को ऐसा बनाने का लक्ष्य रखा कि बच्चे हर जगह इन मूल्यों के उदाहरण देखें, फिर चाहे वह कक्षा हो, खेल का मैदान हो, मध्याह्न भोजन हो या स्कूल सभा।

संवाद की संस्कृति का निर्माण करना

संवाद या वार्तालाप, हमारे विचारों को व्यक्त करने का एक साधन है और हमें बातचीत के माध्यम से मुद्दों को सुलझाने के महत्त्व को पहचानना चाहिए। सभी शिक्षकों ने पहली तीन कक्षाओं में संवाद की संस्कृति विकसित करने के लिए बड़ी मेहनत से काम किया। पहली कक्षा के बच्चे तो स्कूल में नए थे, लेकिन दूसरी और तीसरी कक्षा के बच्चे पहले से ही एक ऐसी व्यवस्था का हिस्सा बन चुके थे, जहाँ अनुशासन और दण्ड बहुत निकटता से जुड़े हुए थे। हम सभी का मानना था कि जब बच्चे भयमुक्त वातावरण में सीखते हैं, तो सबसे अच्छा सीखते हैं, इसलिए, जब वे इधर-उधर भागते, एक-दूसरे को मारते, बुरी भाषा का इस्तेमाल करते, कक्षा के दौरान बातें करते तो उन्हें डाँटने या दण्डित करने की बजाय हम उनके साथ बात करते और उनसे नियमों का पालन नहीं करने का कारण पूछते। बच्चे या तो कोई कारण बताते या शान्त रहते।

यह आज़ादी उनके लिए चूँकि नई थी इसलिए थोड़ी उलझन भरी भी थी और वे समझ नहीं पाते थे कि ऐसी स्थिति में क्या करें। कुछ बच्चों ने इसका फ़ायदा उठाया क्योंकि उन्हें पता

था कि उन्हें कोई डाँटेगा नहीं या उन्हें सज़ा नहीं मिलेगी। ऐसा दो-तीन महीनों तक चलता रहा और एक समय पर आकर मैंने सोचा कि अगर हम नियमों का पालन करने के बारे में बच्चों से बात करने में इतना समय लगाएँगे तो पाठ्यक्रम कैसे पूरा करेंगे। लेकिन हमने बातचीत करने के अवसर निकाल ही लिए। गलियारों में, कक्षाओं में, भोजन के वक्त या स्कूल सभा में, जब भी विद्यार्थी कोई उपद्रव या हंगामा करते, हम उनसे बात करते। लगभग पाँच महीनों के बाद हमें यह नज़र आने लगा कि इसने बच्चों के सोचने की प्रक्रिया को कैसे प्रभावित किया है। अपने दोस्तों के साथ लड़ने की बजाय, वे आपस में बात करते और अपनी समस्या हल कर लेते।

मिलकर बनाए गए नियम

अपने विद्यालय में संवाद की संस्कृति विकसित करने का काम करते हुए हमने अनुशासन के महत्त्व को पहचाना। स्वतंत्रता और अनुशासन एक साथ काम करते हैं और एक-दूसरे को रद्द नहीं कर सकते। इसलिए हमने सभी के लिए कुछ सामान्य नियम विकसित किए जैसे- क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं; अगर किसी ने नियम तोड़े हैं तो हमें क्या करना चाहिए आदि। हमने अपनी स्कूल सभा में इन नियमों को विकसित किया है, जहाँ बच्चों ने भी बहुत सारे विचार रखे और सभी ने सामूहिक रूप से स्कूल के नियम तय किए। बाद में, हमने अपनी कक्षा के नियम भी बनाए, जिन्हें शिक्षक और बच्चे सीखने का बेहतर वातावरण बनाने के लिए अपनाते हैं।

चूँकि हम बच्चों को पहले ही बातचीत का महत्त्व बता चुके थे, इसलिए जब भी कोई बच्चा नियम तोड़ता है तो अन्य बच्चे उससे बात करते और पूछते कि उसने ऐसा क्यों किया। यह बात शिक्षक पर भी लागू होती थी – जब कभी शिक्षकों ने नियम तोड़े तो बच्चों ने उनसे सवाल किए। जैसे-जैसे समय बीतता गया, हमने देखा कि भले ही शुरुआत में सब कुछ अव्यवस्थित-सा दिखाई देता था, जैसे कि हमें एक दिन में एक ही बच्चे के बारे में 15-20 शिकायतें मिली थीं, लेकिन बाद में उसी बच्चे के बारे में शिकायतें घटकर 2-4 प्रति दिन तक हो गईं। पहले तो पूरा पीरियड एक मुद्दे पर बात करने में गुज़र जाता था, लेकिन धीरे-धीरे सब कुछ व्यवस्थित हो गया। और छह-सात महीने के बाद, न केवल शिक्षकों ने, बल्कि हमारे विद्यार्थियों ने भी स्कूल में 'सीखने का माहौल' बनाने की दिशा में काम किया।

जीवन के मूल्य

परिवार और समुदाय की मान्यताएँ बच्चों के सोचने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं, जिससे उनके लिए निष्पक्ष नज़रिए से चीज़ों को देखना मुश्किल हो जाता है। जाति, रंग, लिंग और आर्थिक स्थिति के बारे में विद्यार्थियों की मान्यताएँ हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं। बच्चे किसी अन्य बच्चे की त्वचा के रंग के बारे में यूँ ही कोई टिप्पणी कर देते, उनकी पहचान उनके कपड़ों से करते, उच्च जाति के बच्चे निचली जाति के बच्चे के साथ दोस्ती नहीं करते, वे समूह बना लेते और उसमें विपरीत लिंग को शामिल नहीं करते आदि।

हमने लगभग हर दिन इन मुद्दों का सामना किया और बच्चों के साथ वहीं पर इन विषयों पर बात की। हमने चर्चा की कि किसी व्यक्ति का धर्म या जाति उन्हें अलग नहीं बना देता। हमने उनसे उन कठिनाइयों के बारे में भी बात की जिनका सामना कुछ विद्यार्थी अपने घर पर करते हैं लेकिन फिर भी किस तरह वे अपनी पढ़ाई के लिए प्रयास करते रहते हैं। जब मध्याह्न भोजन के मेन्यू में अण्डे को शामिल किया जाता तो जो विद्यार्थी अण्डे नहीं खाते थे, वे बुरा-सा मुँह बना लेते, दूर बैठ जाते और कुछ ने तो अपने अण्डे खाने वाले दोस्तों से बात करना भी बन्द कर दिया। शिक्षकों ने इस मुद्दे पर स्कूल सभा में, कक्षा में और व्यक्तिगत रूप से बच्चों के साथ चर्चा की। हमने उनका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि लोगों की पसन्द अलग-अलग होती है और हमें उसका सम्मान करना चाहिए। इसके बारे में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए, जो शिक्षक अण्डे नहीं खाते थे, वे उन विद्यार्थियों के साथ उसी क़तार में भोजन करने बैठे जो अण्डे खाते थे। फिर धीरे-धीरे, अन्य विद्यार्थियों ने भी उनके साथ बैठना शुरू कर दिया और कुछ महीनों के बाद भोजन के लिए अलग क़तारें बनना बन्द हो गईं; सब साथ बैठकर खाना खाते। इसमें समय लगा, धैर्य और प्रयास की आवश्यकता पड़ी, लेकिन बच्चों ने आखिरकार एक दूसरे के बीच के अन्तर और गुणों का सम्मान करना शुरू कर दिया।

एक अभिन्न तत्व के रूप में लोकतंत्र

अक्सर हम देखते हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में ज़्यादातर, शिक्षक ही वहाँ हो रही प्रक्रिया का नेतृत्व करते हैं। प्राथमिक स्कूल बच्चों के लिए एक बुनियादी चरण है, जहाँ उन्हें लोकतंत्र, समानता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान रखने के महत्त्व को पहचानने के बारे में सिखाया जा सकता है। हमने एक ऐसी प्रणाली विकसित करने की कोशिश की, जिसमें न तो शिक्षक और न ही चन्द विद्यार्थी कक्षा की प्रक्रियाओं पर हावी हों, बल्कि हर किसी को भागीदारी का मौका मिले।

हमने यह नियम बनाया था कि शिक्षक सहित, हर कोई बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार करेगा, अपना हाथ उठाएगा, और जब कोई और बोल रहा हो तो बीच में टोकेगा नहीं। हर एक की बात सुनी जाएगी और अगर विचारों में मतभेद हों तो हम कारणों को सुनेंगे और बच्चों को तय करने देंगे

से मॉनीटर बनना चाहेगा। नामांकन के बाद विद्यार्थियों के व्यवहार, ज़िम्मेदारी की भावना आदि के आधार पर कक्षा तय करती थी कि कक्षा का मॉनीटर कौन होगा। हर दो महीने में इसी प्रक्रिया का अनुसरण करके मॉनीटर को बदल दिया जाता था।

अपने स्कूल को बेहतर रूप से चलाने के लिए, हमने अलग-अलग समितियाँ बनाईं - खेल, मध्याह्न भोजन, पुस्तकालय, स्कूल सभा आदि और बच्चों को इन समितियों के कामकाज की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। प्रत्येक समिति में 10-12 निर्वाचित विद्यार्थी होते थे। महामारी के कारण स्कूल बन्द होने से पहले, बच्चों ने चुनाव प्रचार शुरू कर दिया था। उम्मीदवार अपने चुनाव चिह्न दिखाने के लिए सभी कक्षाओं में गए थे और वे जो काम करने वाले थे, उसके बारे में बताया था। शिक्षकों ने यह समझने में हर किसी की मदद की कि एक निष्पक्ष चयन प्रक्रिया क्या होती है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा किस प्रकार से कोई प्रणाली बेहतर तरीक़े से कामकाज करती है। स्कूल के खुलने के बाद हम इसे जारी रखेंगे।

सभी शिक्षक एक साथ काम करते थे, चर्चा करते थे और विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और कक्षा के रिकॉर्ड रखते थे, जिससे हमें ठीक-ठीक पता होता था कि किस विद्यार्थी को किस क्षेत्र में मार्गदर्शन की ज़रूरत है। इस प्रक्रिया में, शिक्षकों ने भी सीखा कि उन्हें विद्यार्थियों के साथ अपने व्यवहार में धैर्य और लोकतांत्रिक रवैया रखना चाहिए। विद्यार्थियों को जीवन-मूल्यों के बारे में पढ़ाने के लिए हम केवल पाठ-योजनाओं पर निर्भर नहीं रहे, बल्कि जहाँ कहीं भी सम्भव होता, हम ऐसा करते। हमने शैक्षिक सामग्री में निहित मूल्यों पर चर्चा की; अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित किए गए सहानुभूति, टीम भावना, प्रेम और दूसरों की परवाह करने के छोटे-से-छोटे कामों की सराहना की। हम विद्यार्थियों को बेहतर मानव और ज़िम्मेदार नागरिक बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन करने के प्रयास जारी रखेंगे।

स्थितियों को सँभालना : कुछ उदाहरण

चोरी करने के बारे में

स्कूल सभा के दौरान, हमने पैसे या अन्य चीज़ों को चुराने की आदत पर, और इस बारे में चर्चा की कि यह हमारे दिमाग़ को कैसे प्रभावित करती है। कैसे यह एक आदत बन सकती है और बाद में इसे बदलना कितना मुश्किल हो सकता है। बच्चों ने कुछ उदाहरण साझा किए कि उनके कुछ मित्र हैं, जो चोरी करते हैं। हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे पता चला था कि एक बच्ची ने अपने दोस्तों के लिए चॉकलेट ख़रीदने के लिए घर से पैसे चुराए थे। उसका नाम लिए बिना, हमने आपस में चीज़ों को साझा करने और माता-पिता से अपने ज़रूरत की चीज़ें माँगने के बारे में सामान्य रूप से चर्चा की। बाद में, मैंने उस बच्ची के साथ बात की और उसे इस आदत के बुरे प्रभावों को समझाने की कोशिश की। उसने भी स्वीकार किया कि वह बिना पूछे पैसे लेती है और दोबारा ऐसा नहीं करेगी।

दूसरों की मदद करने के बारे में

विद्यार्थी हमसे उन बच्चों की शिकायत करते हैं जो दूसरे बच्चों की मदद नहीं करते हैं। मैं उनसे पूछती हूँ कि वे ख़ुद ही उन बच्चों से बात करने की बजाय मेरे पास क्यों आते हैं। मैं उनसे कहती हूँ कि अगर किसी बच्चे को अपनी किसी आदत में सुधार की ज़रूरत हो तो उसे उसके बारे में बताना कोई बुरी बात नहीं है। चीज़ों को साझा करना चाहिए और एक बेहतर इन्सान बनने में एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। मैंने उन्हें बताया कि हम शिक्षक भी ऐसा ही करते हैं। कभी-कभी हम लोगों में भी किसी बात को लेकर असहमति होती है, लेकिन हम यह समझते हैं कि सभी की भलाई के लिए, हमें चीज़ों को साझा करना चाहिए और दूसरों से मदद माँगनी चाहिए। हम रचनात्मक फ़ीडबैक के बारे में भी बात करते हैं, और इस पर भी कि दूसरे व्यक्ति को बुरा महसूस कराए बिना हम ऐसा कैसे कर सकते हैं।

दयालुता के बारे में

एक बार हमने कक्षा में बैठने की व्यवस्था बदल दी, क्योंकि हमें लगा कि हमें बच्चों के एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में बदलाव लाने की आवश्यकता है। इसलिए अब वे एक गोले में बैठते हैं। हम कक्षा में कोई चर्चा कर रहे थे कि तभी किसी ने एक अन्य बच्चे का नाम लिया और कहा कि वह तो इस अवधारणा के बारे में नहीं जानता होगा (कुछ बच्चों के रूप-रंग पर भी टिप्पणी की गई थी)। इसलिए हमने इस बारे में बहुत विस्तृत रूप से चर्चा की कि कुछ बच्चों को सीखने में कठिनाई क्यों होती है, लेकिन वे बहुत-सी ऐसी चीज़ों को जानते और समझते हैं जो दूसरों को नहीं आती हैं। हमने इस विशेष बच्चे की पारिवारिक परिस्थितियों के बारे में बात की कि कैसे इसके बावजूद उसने बहुत तरक़्क़ी की है और कई मायनों में सुधार किया है जैसे उसका लेखन कौशल, चीज़ों की समझ, व्यवहार आदि।

हमने एक और बच्चे तथा उसके घर के बारे में भी बात की और बताया कि कैसे उसकी माँ अपने परिवार को पालने के लिए बहुत मेहनत करती है। इसलिए किसी के बारे में कुछ भी कहने से पहले हमें सोचना चाहिए क्योंकि हम नहीं जानते कि वे काम करने के लिए कितनी मेहनत कर रहे हैं। हमें अपने दोस्तों की मदद करनी चाहिए, विशेष रूप से जी1 (जो विद्यार्थी बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं) विद्यार्थियों की, ताकि उनका सीखना बेहतर हो जाए और वे

तेज़ी से सीख पाएँ। इसके लिए हमें उन चीज़ों को सीखने में उनकी मदद करनी चाहिए जिन्हें हम जानते हैं और उनका अच्छा दोस्त बनना चाहिए।

छेड़खानी के बारे में

स्कूल सभा के दौरान, मैंने राघव को रोते हुए देखा और उससे पूछा कि क्या हुआ। उसने बताया कि उसने होंठों पर बाम लगाया था, जो चमकीला था और एक सहपाठी ने कहा कि उसने लिपस्टिक लगाई है और वह लड़की की तरह दिख रहा है। मैंने उससे पूछा कि इसमें रोने वाली कौन-सी बात है? क्या लड़की होना बुरा है या होंठों पर बाम लगाना बुरा है? हमने इस पर काफी विस्तार से चर्चा की; हमने बच्चों से कहा कि लिपस्टिक या बाम लगाने से कोई भी आदमी या औरत नहीं बन जाता। और उन्होंने ऐसा क्यों सोचा कि केवल महिलाएँ ही लिपस्टिक लगाती हैं, दुनिया में और हमारे देश में भी ऐसे पुरुष हैं, जो मेकअप करते हैं, यही नहीं वे महिलाओं के कपड़े भी पहनते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें यह पसन्द है। हमने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि छोटी-छोटी बातों पर रोना नहीं चाहिए। जिस लड़की ने राघव को छेड़ा था, हमने उससे भी कहा कि अगर वह बाम को लेकर उत्सुक थी तो उसे राघव से पूछना चाहिए था और ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए जिससे दूसरों को ठेस पहुँचे।

साझी सम्पत्ति का सम्मान करना

हमारी हर कक्षा में एक पुस्तकालय कोना है जहाँ हम एक रस्सी पर किताबें लटकाते हैं। एक दिन एक बच्चे ने मुझे बताया कि दो विद्यार्थी रस्सी पर किताबें फेंक रहे थे। मैंने उनसे बात की और पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। मैंने उन्हें उन बच्चों के बारे में बताया जो किताबों को ठीक तरह से रखते हैं। मैंने कहा कि जब वे आप लोगों को किताबें फेंकते देखते हैं तो उन्हें कैसा लगता होगा। फिर मैंने वहाँ से सभी पुस्तकें निकाल लीं। और उनसे कहा कि आगे से कक्षा में कोई भी पुस्तक नहीं रखी जाएगी क्योंकि यदि हम अपने पास मौजूद संसाधनों का सम्मान नहीं कर सकते तो हमें उन्हें अपने पास रखने का कोई हक़ नहीं। हमें उन चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए जो हमें दी जाती हैं क्योंकि अपनी कक्षा को ठीक से रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। दोनों बच्चों ने माना कि उन्होंने ग़ैर-ज़िम्मेदाराना हरकत की थी। वे आगे से ऐसा नहीं करेंगे। मैंने किताबों को वापस रस्सी पर रख दिया।

हिंसक ऑनलाइन गेम्स के बारे में

सुरेश ने बताया कि कुछ लड़के कक्षा में नक़ली *पबजी* (*PubG*) खेल रहे थे, तो मैंने उससे पूछा कि कौन-कौन खेल रहा था। सुरेश ने दो नाम बताए लेकिन जब मैंने पूछा कि जो कोई भी खेल रहा था, वह अपने आप खड़ा हो जाए तो कई खड़े हो गए। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें अपने दोस्तों पर बन्दूक तानना और उन्हें मारना पसन्द है। उन्होंने कहा कि नहीं। फिर मैंने पूछा कि क्या कक्षा इस तरह के खेल खेलने की जगह है। उन्होंने कहा कि नहीं। हमने चर्चा की कि मोबाइल फ़ोन पर ज़्यादा समय तक खेल खेलना आँखों और दिमाग़ को कैसे प्रभावित करता है इत्यादि। मैंने कुछ समाचारों की ओर उनका ध्यान खींचा कि कैसे बच्चों को मोबाइल फ़ोन और गेम्स की लत लग जाती है। मैंने उन्हें बताया कि खेल खेलना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन ऐसा करने का एक समय और उम्र होती है और कक्षा ऐसे खेल खेलने की जगह नहीं है जिसमें किसी भी तरह की हिंसा दिखाई जाती हो।

धूम्रपान करने के बारे में

जब दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों ने मुझे बताया कि एक बच्चा पेंसिल का उपयोग करके सिगरेट के कश लेने की नक़ल कर रहा था तो हमने कैंसर के बारे में लम्बी चर्चा की। ऐसा लगा कि विद्यार्थी धूम्रपान से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के बारे में जानते थे। धूम्रपान करने की नक़ल करने वाले बच्चे ने भी अपने परिवार और परिवेश के बारे में बात की, जिसने उसके व्यवहार को प्रभावित किया था। उसके माता-पिता और आस-पड़ोस का हर व्यक्ति तम्बाकू का सेवन और धूम्रपान करते थे, जिसका असर उसके जीवन पर भी पड़ा था। कई बार हमें उसके थैले में तम्बाकू के पैकेट मिले थे और उन पर विस्तृत चर्चा हुई थी। अब वह तम्बाकू नहीं खाता है।

दादागिरी के बारे में

कुछ विद्यार्थियों ने शिकायत की कि दो बच्चों ने बाथरूम में एक बच्चे की पैण्ट उतार दी थी। मैंने उस बच्चे से पूछा और उसने इसकी पुष्टि की, लेकिन जब मैंने उन लड़कों से पूछा, जिन्होंने ऐसा किया था तो उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया। कुछ अन्य बच्चों ने बताया कि उन्होंने यह घटना देखी है और यह भी बताया कि दोनों लड़के कई बार इस बच्चे को पीटते भी हैं।

मैंने उनसे दूसरों को मारने की आदत के बारे में बात की, विशेष रूप से, ऐसे बच्चों को जो पलटकर नहीं मारते। मैंने उन्हें बताया कि दूसरों को इस तरह मारने वालों को बदमाश या *बुली* कहा जाता है और उनसे पीड़ित बच्चे कभी-कभी स्कूल तक छोड़ देते हैं या कम आत्मसम्मान व निराशा के शिकार हो जाते हैं। और अगर वे ऐसी स्थितियों से न निपट पाएँ तो वे कोई ग़लत क़दम भी उठा सकते हैं। दोनों लड़कों ने इस बच्चे से माफ़ी माँगी और लिखकर दिया कि उन्होंने जो किया वह ग़लत था और वे इसे नहीं दोहराएँगे।

कुछ अन्य घटनाओं की सूचना भी शिक्षकों को दी गई। जैसे

दूसरों पर पत्थर फेंकना, स्कूल परिसर में फूल तोड़ना या गालियाँ देना। ऐसी हर स्थिति के लिए बच्चों को न तो दण्डित किया गया, न ही दूसरों के सामने अपमानित। उन्हें ऐसे बर्ताव के परिणामों का एहसास करवाया गया और इसे न दोहराने के लिए राज़ी किया गया।

** बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।*



